कुदरत का कानून

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

कुदरत का कानून अर्थात् ईश्वर का बनाया हुआ नियम। यह एक ऐसा कानून है जहां सबको समान दृष्टि से देखा जाता है। किसी के साथ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता। प्रकृति में जितने भी पदार्थ हैं सब ईश्वर के कानून से चलते हैं। सूरज का निकलना, हवा का बहना, नदियों का प्रवाहित होना, अग्नि का जलना, ऋतुओं का परिवर्तन होना, नदी, पहाड़, झरनों की रचना होना सब ईश्वर के कानून से होते रहते हैं। प्रकृति का नियम शाश्वत नियम हैं। प्रकृति कभी अपवाद नहीं करती। सबके साथ समान व्यवहार करती है। प्रकृति के साथ जो प्राणी जीवन–यापन करता है, उसे किसी प्रकार का रोग–दोष नहीं हो सकता। वह शतायु होता है। इसी संबंध में आत्म विज्ञान का विवेचन किया गया है। कूदरत का कानून जड़ एवं चेतन जितने भी पदार्थ हैं, सब पर समान रूप से लागू होता है। दोनों के माध्यम से जीवन चलता है।

चौरासी लाख जीव योनियों का उत्पत्ति स्थान यह सृष्टि ही है। प्रकृति में सभी जीवन–यापन करते हैं। जीव की चार गतियां हैं। अपने–अपने कर्म के अनुसार सभी जीव गतियों को प्राप्त करते है। प्रकृति के नियम के अनुसार ही जो जैसा कर्म करता हैं उसको वैसा फल मिलता है। कुछ लोग पूर्वजन्म में अच्छा कर्म करते हैं तो उन्हें अच्छी योनि प्राप्त होती हैं। कुछ लोग बुरा कर्म करते हैं तो उन्हें बुरी योनि प्राप्त होती है। एक व्यवस्थित शक्ति ही सम्पूर्ण सृष्टि को संचालित कर रही है। कुछ लोग उसे ईश्वर कहते हैं, कुछ लोग उसे व्यवस्थित शक्ति कहते हैं और कुछ लोग यह कहते हैं कि यह नियम के अनुसार अपने आप घटित हो रहा है। सभी दृष्टियों में एक बात समान है। वह बात है कोई न कोई शक्ति अवश्य है, जो इस सृष्टि का संचालन कर रही है।

कुदरत का कानून निश्चित है। उसमें कुछ भी हेर–फेर नहीं होता। कुदरत के कानून के अनुसार सभी को पुरस्कार और दण्ड मिलता रहता है। कुदरत का कानून सभी के लिए समान है। वहां न कोई छोटा है और न बड़ा। एक मां के दो पुत्रों में एक बड़ा अधिकारी बन जाता है और दूसरा साधु। ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए की एक ने पूर्वजन्म में ऐसा कर्म किया था, जिसके परिणाम के रूप में वर्तमानकाल में ऐसी परिस्थिति का निर्माण हुआ जिससे एक माता के दो पुत्रों में स्पष्ट भेद हो गया। एक अधिकारी बन गया और एक साधु। यह सब कर्मों का खेल है। जो जैसा कर्म किया हैं वह उसी का फल भोगने के लिए आगामी जीवन प्राप्त करता है। इसमें किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होता। प्रकृति के नियम में कोई बदलाव नहीं होता। उसके नियम को सबको मौन–मूक भाव से स्वीकार करना पड़ता है। कुदरत संयोग जुटाती है। आम का फल मीठा होता है, नीम का फल कड़वा होता है, बबूल में कांटे होते हैं। ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए की प्रकृति में ऐसी व्यवस्था बनी रहती है। जिससे सभी संचालित हो रही है। कुदरत के कानून के बिना एक पता भी नहीं हिलता। द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की व्यवस्था प्रकृति कर देती हैं। इसी को संयोग कहते हैं। किसी घटना या दुर्घटना के घटित होने में भी इनका योगदान होता है। एक ट्रेन में हजारों यात्री यात्रा करते हैं। दुर्भाग्य से जब दुर्घटना होती है तो अनेक लोग हताहत होते हैं। कुछ लोग मर जाते हैं। कुछ लोग जीवित रह जाते हैं। यहां पर भी कुदरत का कानून देखने को मिलता है। ऐसी अवस्था में लोगों का पूर्वजन्म का किया हुआ कर्म और धर्म उनके सामने आकर खड़ा हो जाता है। वही धर्म उनकी रक्षा करता है। जिससे कोई जीवित रहता है। जिसने अच्छे कर्म नहीं किये है, उनकी धर्म भी रक्षा नहीं करता। इसलिए दुर्घटना में वे मारे जाते है। इसलिए मनुष्य को सदैव सतकर्म करना चाहिए।

कहा भी गया है– शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् अर्थात् शरीर धर्माचरण का साधन हैं। धर्म आत्मा के साथ जुड़ा रहता है। धर्म की अनेक प्रकार की व्याख्या की गई है। लौकिक धर्म के रूप में पूजा–पाठ, सतकर्म, दान, सत्संग और धर्मोपदेश आदि का सुनना आता है। इसके द्वारा जीव की आस्तिक बुद्धि बढ़ती है। आस्तिकता से श्रद्धा का भाव जागृत होता है। श्रद्धा से बुद्धि और

विवेक जागृत होता है। इसलिए धर्माचरण करने से कभी–कभी बुरे कर्म भी नष्ट हो जाते है। मनुष्य जो कुछ भी प्राप्त कर रहा है, वह सब पुरुषार्थ और प्रारब्ध दोनों का योग हैं।

भारतीय संस्कृति ईश्वर केन्द्रित है। ईश्वर सबकुछ कर सकता है। जिस व्यक्ति की सहायता ईश्वर करता है, उसको कोई नहीं मार सकता। चाहे पूरा संसार ही उसके विरुद्ध हो जाये फिर भी उस व्यक्ति का बाल भी बांका नहीं हो सकता। सूक्ति रूप में कहां जाये तो इसको इस रूप में कहा जा सकता है–

जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोय,

बाल न बांका कर सके जो जग बैरी होय।

कोई भी व्यक्ति कर्मों से बड़ा या छोटा होता है। यदि वह अच्छा कर्म करता है, सदाचार पूर्वक व्यवहार करता है, ईश्वर पर विश्वास करता है तो निश्चित ही ईश्वर भी ऐसे व्यक्ति की सहायता करता है। मानव निर्मित कानून में भेदभाव की आशंका हो सकती है किंतु कुदरत का कानून सर्वमान्य कानून है जो भेदभाव रहित है।